

वुम् (च्युवुम् RV. 8, 42, 4), अच्युवीतन, (आ) चुच्युवीमहि, (आ) चुच्युवी-  
रत RV. 8, 9, 8, 9. 1) act. in Schwanken versetzen, bewegen; schütteln,  
aufregen: दृळ्कानि RV. 1, 168, 4. 3, 30, 4. 1, 166, 5. ज्ञानं गिरिन् 37,  
12. वृत्तान् AV. 12, 1, 51. 3, 53. यथा वातश्चावयति भूम्यां रेणुमत्तरिज्ञा-  
धम् 10, 1, 13. med. sich bewegen, erschüttert werden: अच्युता चिह्याव-  
यते रजोसि RV. 6, 31, 2. — 2) lockern: पट्यावयव विशुरेव संहितम् RV.  
1, 168, 6. — 3) von der Stelle bewegen, wegschaffen, vertreiben: आयत-  
नात् Çat. Br. 1, 6, 4, 6. पितरं प्रजापतिं संपदश्चावयति 10, 2, 7. TS. 2,  
2, 7, 5. स्थानान्मां च्यावयेत् MBh. 1, 2915. R. 1, 34, 19. 2, 64, 22. लङ्काया-  
श्चावयामास युधि जिता धनेश्वरम् MBh. 3, 15920. च्यावितानां स्वधामतः  
Bhāg. P. 8, 17, 12. — 4) Jmd um Etwas bringen; mit 2 acc.(1): सा हि  
देवी महाराजम् — अपि न च्यावयेत्प्राणान् R. 2, 53, 7. — 5) heraus —,  
herabfallen machen: दिवा वृष्टिम् TS. 3, 3, 4, 1. पुरा ययातिर्विष्वष्ट्या-  
वितः पतितः तितैः । पुनरुपेतः स्वर्गं दैहिकैः MBh. 13, 324. तस्य प-  
ट्यावितं तेजः पृथिवीमन्वपयत् HARIV. 1326. — desid. vom caus. चिह्या-  
वयिषति und चुच्या° P. 7, 4, 81. Vop. 19, 15.

— अप abfallen, sich entfernen: इहैवैधि मापं च्योष्ठाः RV. 10, 173, 2.  
— caus. vertreiben: इन्द्रो अङ्गं मरुद्भयम्भी पदपं चुच्यवत् RV. 2, 41, 10.  
— Vgl. अपच्यव, अनपच्युत.

— आ caus. act., selten med. 1) durch Anstossen u. s. w. überfließen  
machen, ausgießen: आ दशभिर्विष्वक्त्वं इन्द्रः कोशमच्युच्यवीत् RV. 8, 61,  
8. कोशे न पूर्णा वसन्ता न्यष्टमा च्यावय मयेद्रीयं प्रूर्म् 10, 42, 2. आ ये नरः  
सुदान्वो ददाप्रुषे दिवः कोशमच्युच्युः 8, 33, 6. 59, 8. 4, 17, 16. आ वो स्तो-  
मां इमे मन् नभो न चुच्युवोरत 8, 9, 8. आस्मिन्नुया अच्युच्युर्दिवो धारा अत-  
श्चत (offenbar entsteht aus अस्मश्चतः) TS. 3, 3, 2; in der Wiederholung  
4, 2 wird °च्युच्युः geschrieben. — 2) herbeiziehen, — schaffen, — locken:  
यद्य वामुक्थैराच्युच्युवीमहि RV. 8, 9, 9. 87, 7. आ वो प्रावाणो धीभिर्वि-  
प्रो अच्युच्युः 42, 4. 84, 2. 10, 101, 12. मरुद्भो ते गवामा च्यावयामास 4, 32,  
18. AV. 3, 3, 2. वृष्टिम् TS. 2, 4, 10, 3. Çat. Br. 4, 3, 3, 1.

— उद् caus. aus —, ablösen: (वङ्कपः) ता अनुद्योह्यावयतात् Ait. Br.  
2, 6; vgl. P. 7, 1, 39, Sch.

— उप s. उपच्यव.

— निम् s. निश्चयन.

— परि 1) sich ablösen, entfliegen: शरैषोस्तान्द्रोणपापरिच्युतान्  
MBh. 7, 5220. — 2) sich entfernen von, untreu werden: धर्मात्परिच्युतो  
रामः R. 4, 16, 20. — 3) verdrängt werden von, um Etwas kommen,  
einer Sache verlustig gehen: पुण्यस्थानात्परिच्युताः MBh. 3, 14456. अथ  
प्रचलितः स्थानादामनाच्च परिच्युतः 3, 4048. 4052. प्रधंशितः सुरासिद्धिर्षि-  
लोकात्परिच्युतः प्रपताम्यत्पुण्यः 1, 3577. R. 4, 16, 8. वृद्धसेवापरिच्युतः  
Bhāg. P. 3, 30, 6. — 4) von Etwas loskommen, befreit werden: पातनाभ्यः  
परिच्युतः Mārk. P. 13, 38. 79. — 5) herabkommen: (कुञ्जराः) शैलपृङ्ग-  
परिच्युताः MBh. 3, 11614. परिच्युतः zu Falle gekommen, im Elend sich  
befindend (Gegens. समृद्ध) 3, 2334. — 6) umströmen: पदातीन्सादिसंधाश्च  
नतत्रौषपरिच्युतान् MBh. 7, 6449.

— प्र 1) sich fortbewegen, von der Stelle kommen; sich fortbegeben,  
sich entfernen: प्र वा एवो ऽस्माहोकाह्यवते TS. 1, 5, 8, 3. Çat. Br. 2, 2,  
1, 18. AV. 9, 8, 3. प्र च्यवस्व तन्वर्त्तं सं भर्स्व 18, 3, 9. देवेभ्यो ऽनाद्यं प्र-  
च्यवते Çat. Br. 1, 6, 4, 17. हित्वा ग्रामान्प्रच्युता यत्तु शत्रवः zum Weichen

gebracht AV. 5, 20, 3. — 2) sich entfernen von so v. a. untreu werden:  
धर्मसमात्प्रच्युतः M. 9, 272. अस्मादप्रच्युतः 12, 116. सत्त्वात्प्रच्यवमानानाम्  
MBh. 3, 11254. सत्यात्प्रच्यवमानानाम् 3, 1665. — 3) verdrängt werden  
von, um Etwas kommen, einer Sache verlustig gehen: करोणव इवार-  
ण्ये स्थानप्रच्युतयूयवाः R. 2, 65, 20. स एव प्रच्युतः स्थानात् PAÑKAT. III, 43.  
प्रच्युता राज्यात् R. 3, 33, 22. ऐश्वर्यात्प्रच्युतः MBh. 3, 2314. — 4) hervor-  
kommen, hervorströmen: योन्या इव प्रच्युतो गर्भः AV. 6, 121, 4. प्रच्युतो  
मातुरुदरात् Mārk. P. 17, 8. सप्तमे ऽब्दे गते चापि प्राच्यवतः (गर्भः) MBh.  
3, 8640. ततः (सरसः) प्रच्यवते — नदी R. 4, 44, 47. — 5) herabfallen: व-  
आत्प्रच्यवमानादिमे लोका संरेवते Çat. Br. 3, 6, 4, 13. प्रच्युतो वै परस्ता-  
त्सोमः 2, 4, 2. स तु मां (गङ्गां) प्रच्युतां देवः शिरसा धारयिष्यति MBh. 3,  
9943. मात्यानि पादपप्रच्युतानि R. 2, 91, 21. 5, 13, 27. straucheln: अतो  
नियम्यते लोकः प्रच्यवन्धर्मवर्त्मम् MBh. 14, 517. — 6) in Bewegung  
setzen, treiben: मरुद्भिः प्रच्युता मेघा वर्षन्तु पृथिवीमन् AV. 4, 13, 7. —  
Vgl. अप्रच्युत. — caus. 1) bewegen, erschüttern: यस्य मदे च्यावयति प्र  
कृष्टीः RV. 3, 43, 7. 7, 19, 1. 4, 17, 5. अच्युता 2, 24, 2. अश्मानम् 5, 56, 4.  
59, 7. 1, 64, 3. 83, 4. — 2) von der Stelle bewegen; wegschaffen, vertrei-  
ben: पूषा वेतश्चावयतु प्र विद्वान् RV. 10, 17, 3. Çat. Br. 2, 6, 4, 26. 3, 3,  
4, 17. 8, 3, 3. 5, 8. ओषधीः प्राच्युच्युर्वृत्तिकं च तन्वोर्ऽरपः RV. 10, 97, 10.  
1, 37, 11. अङ्गादङ्गात्प्र च्यावप (विषम्) AV. 10, 4, 25. स्थानात्प्रच्यावयेप्ये  
देवराजमपि MBh. 3, 10827. ततो निवातकवचैरितः प्रच्याविताः सुराः  
12189. तेन साचिव्यपदात्प्रच्यावितः PAÑKAT. 86, 13. — 3) Jmd von Et-  
was abbringen: स्वमतात् P. 8, 2, 94, Sch. अयसादात् Sch. in Wils.  
SĀMĀKHAJAK. S. 53. — 4) herabfallen —, ausfallen machen: एकेन पक्षिणा ।  
शिरः प्रच्यावयामास तद्वयात्प्रापतद्विष MBh. 7, 1717. DAÇAK. in BENF. Chr.  
196, 21. प्रच्यावयति रोमाणि Suçr. 1, 293, 7. zu Falle bringen (uneig.):  
प्रच्यावितं ब्रह्म चिरं धृतं यत् Bhāg. P. 9, 6, 50. — Vgl. प्रच्यावन.

— अतिप्र vorübergehen an (acc.): नैनं यशो ऽति प्रच्यवते TBh. 2, 3, 2,  
5. — caus.: आदित्यमिमो लोकानति प्रच्यावयति Çat. Br. 8, 7, 2, 5.

— अनुप्र sich nach Jmd (acc.) in Bewegung setzen, Jmd nachfolgen:  
यो प्रच्युतामनुं यज्ञा प्रच्यवते AV. 8, 9, 8. अग्निं हि सो ऽनुप्राच्यवत Ait.  
Br. 2, 6. Çat. Br. 1, 1, 2, 22.

— अभिप्र sich bewegen gegen, gelangen zu: प्र च्यवस्व भुवस्पते वि-  
श्वान्युभि धामानि VS. 4, 34. TS. 2, 2, 6, 4.

— संप्र caus. von verschiedenen Seiten her in Bewegung setzen, zu-  
sammenbringen: दिग्भ्य एव वृष्टिं संप्रच्यावयति TS. 2, 4, 9, 2.

— वि 1) auseinandergehen: दग्धा सा पतिता भूमी — ऊतशनप्रदीप्तेव  
राजसी विच्युता गदा R. 3, 33, 53. कवरो च विच्युताम् Bhāg. P. 8, 12, 21.  
— 2) vergehen, zu Grunde gehen: ब्रह्मलोकमविच्युतम् Jāg. 1, 212  
(Sr.: unverlierbar). — 3) abgehen von, untreu werden: आचाराद्विच्युतो  
विप्रः M. 1, 109. स्वकाहर्मात् 9, 273. — 4) ein Versehen machen: यथा-  
विधानेन पठन्सामगायमविच्युतम् ohne Fehler Jāg. 3, 112. — 4) losma-  
chen: कर्पश्चिन् विच्युताः प्र वीर्यैः सिन्नते RV. 2, 17, 3.

— सम् caus. wegschaffen, abschiessen: नाकुलिस्तस्य विशिखैर्विर्म — गा-  
त्रात्संच्यावयामास MBh. 7, 7515.

2. च्यु, च्यावयति lachen (v. l. ertragen, in Folge einer Verwechselung  
von रुसन und सकुन) Duārup. 33, 72. — Vgl. च्युम्.

1. च्युत् (von 1. च्यु) adj. am Ende von comp. erschütternd, fallend: